शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2014

भारतीय लोकतंत्र में राजनीति का भविष्य

अभिनव दिव्यांशु (शोधार्थी)
मानवीकि एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
इतिहास एवं सभ्यता विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा
उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

राजनीति के भविष्य के बारे में चर्चा करना हमेशा से कठिन रहा है। उस पर भी भारतीय राजनीति की चर्चा करना और भी दुष्कर कार्य है। यहाँ की हर स्तर पर व्याप्त विविधता ही इस प्रश्न को रोचक बनाती है। विकास के साथ-साथ लोगों में राजनीतिक समझ बढ़ने के परिणामस्वरूप भविष्य की राजनीति का आकलन करने में कठिनाई होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजनीति के भविष्य पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भविष्य में क्या होगा यह तो कोई नहीं जानता और वह भी राजनीति के भविष्य के बारे में चर्चा करना बहुत ही कठिन कार्य है। भारत मैं यह कार्य तो और भी कठिन हो जाता है क्योंकि यहाँ भौगोलिक स्तर के साथ-साथ राजनैतिक स्तर पर भी बहुत विषमता है। भविष्य की बुनियाद वर्तमान व भूतकाल पर टिकी होती है। यदि हम वर्तमान व भूतकाल के कुछ पहलुओं को ध्यान में रख कर उसके भविष्य पर चिंतन करें तो शायद हम भविष्य का आकलन कर सकते हैं। यद्यपि यह कोई आवश्यक नहीं कि वह आकलन भविष्य में सही व आवश्यक रूप से घटित हो।

भारत में राजनीतिक व्यवस्था

भारत के संविधान के अनुसार भारत एक गणराज्य है अर्थात भारत आन्तरिक व बाह्य रूप स्वतन्त्र है। भारत का शासक भारतीय जनता द्वारा चुना गया प्रतिनिधि है। भारतीय संविधान ने सम्पूर्ण शक्ति भारतीय जनता को प्रदान की है। भारत में लोकतंत्र की स्थापना की गयी है। लोकतंत्र क्या है इसकी कोई निश्चित परिभाषा राजनीति विज्ञान में अभी तक नहीं बन पाई है, जिस पर सभी एक मत हो जायें। इसका प्रमुख कारण यह है कि विभिन्न देशों ने अपनी सुविधानुसार लोकतंत्र की अनेक प्रणालियों को अपनाया है। जिसे एक परिभाषा में व्याख्यायित नहीं किया जा सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा था कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वरा शासन है। चाहे जो भी हो भारत ने लोकतंत्र को अपनाया है। यही एक ऐसी प्रणाली है, जो भारत की विषम स्थिति में सबसे उपयुक्त है। जिसमें सभी को अपनी बात कहने का अवसर

मिलता है । यदि हम लोकतंत्र व राजनीति से संम्बधित कुछ प्रमुख पहलुओं का अध्ययन करें तो हम भारतीय लोकतंत्र में राजनीति के भविष्य का आकलन कर सकते हैं। लोकतंत्र का एक पहलू समानता है। चाहे यह समानता राजनैतिक स्तर पर हो या सामाजिक स्तर पर। भारतीय समाज जाति व्यवस्था में बंटा हुआ है, जो असमानता का पोषक है। राजनैतिक स्तर पर इसे कम तो किया जा सकता है, परन्तु इसे सामाजिक स्तर पर पूर्ण समाप्त नहीं किया जा सकता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि राज्य की अपेक्षा समाज ज्यादा व्यापक है। यदि समानता में कमी नहीं आयी तो लोकतंत्र भारतीय समाज में अपनी जड़ें नहीं जमा पायेगा। लोकतंत्र व राजनीति का दूसरा पहलू है सत्ता का केन्द्रीकरण शासक वर्ग तक ही है। भले ही पंचायती राज प्रणाली में ग्राम स्तर तक सत्ता का विकेन्द्रिकरण किया गया है, परन्तु ग्राम में भी शासक सवर्ण जातियां ही हावी हैं और अपने बेतुके फैसलों को भरी पंचायत में सुनाती हैं। शासक वर्ग लोकतंत्र को सत्ता के हथियार के रूप में प्रयोग कर रहा है तथा निम्न वर्ग लोकतंत्र को समझ कर अपने अधिकारों की मांग कर रहा है। यही द्वंद्व लोकतंत्र की प्रमुख चुनौती है। लोकतंत्र भारत की शासन संस्थाओं से संचालित होता है। हाल ही में इन शासन संस्थाओं पर जनसंख्या का भारी दवाब है। अनेक योजनायें हैं, पर फिर भी जनता सन्तुष्ट नहीं है। जनता का राजनैतिक संस्थाओं से भरोसा खोता जा रहा है। भ्रष्टाचार भी एक प्रमुख समस्या बन गया है। राजनीति और अपराधियों के गठजोड़ से भी परेशानी पैदा हुई है। अनेक क़ानूनों के होने के बावजूद इस पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। यदि लोकतंत्रात्मक तरीके से समस्याओं का हल नहीं निकल पा रहा है तो उससे आगे के विकास पर अपना भरोसा जताना होगा। लोकतंत्र का एक अन्य पहलू है प्रशासनिक शिथिलता। प्रशासनिक कार्यों में तेजी लाये बिना आम लोगों को संतुष्ट नहीं किया जा सकता है। यद्यपि इसमें सुधार के लिये ई-गवर्नेस को लागू किया जा रहा है, परन्तु भारत के दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों तक इसकी पंहुच न के बराबर है। किसी भी लोकतान्त्रिक देश में कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इनके कार्यों पर नजर रखने का काम करती है प्रेस। अभिव्यक्ति की आजादी से लोकतंत्र को मजबूत होने में सहायता मिलती है। सूचना क्रांति के दौर में इलेक्ट्रोनिक मीडिया अचानक से महत्वपूर्ण हो गया है। बड़े मीडिया हाउस और निजी चेनलों का उद्देश्य अधिक से अधिक मुनाफ़ा कमाना हो गया है। कई बार तो यह अपनी सीमाओ का उल्लंघन कर देता है। लोकतंत्रात्मक देश में सभी को साथ में लेकर ही भविष्य की राजनीति की दिशा तय होगी। आज भी ऐसे अनेक दलित और वंचित तबके के लोग है, जिन्हें आवाज नहीं मिली है। उन पर अत्याचारों का सिलसिला बदस्तूर जारी है। अल्पसंख्यकों की रक्षा करना बहुसख्यकों की जिम्मेदारी है। लोकतंत्र में वोट से सरकार तो बदलती है परन्तु नौकरशाही वही रहती है। दलित जातियों के लिए लागू की जाने वाली योजनाओं को अमलीजामा पहनाने की जवाबदारी प्रशासन की होती है। उन्हें ठीक तरीके से क्रियान्वित करने पर ही भविष्य की राजनीति समानता की ओर अग्रसर होगी।

निष्कर्ष

शब्द–ब्रह्म

ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 जून 2014

भारतीय लोकतंत्र में राजनीति के भविष्य को निर्धारित करने में समाज के निम्न तबकों की भूमिका को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। सामाजिक सुधारों की गति को तीव्र कर हम अपने इच्छित लक्ष्य की शीघ्र प्राप्ति कर सकते हैं। आजादी के इतने साल बीत जाने के बाद भी उनकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है। वे आज भी अनेक प्रकार के दंश झेल रहे हैं। भविष्य की राजनीति को निर्द्वन्द्व बनाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 कश्यप सुभाष, भारत का संविधान और भारत की संसद

2 शर्मा ए ब्रजकिशोर, भारत का संविधान

3 पंजम एस के शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास

4 देसाई, ए.आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, नई दिल्लीः मैकमिलन प्रकाशन, 1988

5ैतपदपअंेए डण्छणए बंेजम पद डवकमतद प्दकपंद ंदक व्जीमत म्ेेंलेए छमू क्मसीपरू ।ेपं च्नइसपबंजपवद भ्वनेमए1997 ैतपदपअंेए डण्छणए बंेजम द्द प्जे ज्ूमदजपमजी बमद